



Original Article

विद्यालयी शिक्षकों के दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता एवं नौकरी-संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

डॉ. जयन्ती कुमारी

सहायक प्राध्यापिका, मनोविज्ञान विभाग,
किशोरी सिन्हा महिला कॉलेज, औरंगाबाद
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, (बिहार)

Manuscript ID:

IJAAR-130228

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 2

November - December 2025

Pp. 178 - 184

Submitted: 21 Dec 2025

Revised: 28 Dec 2025

Accepted: 31 Dec 2025

Published: 1 Jan 2026

Corresponding Author:
डॉ. जयन्ती कुमारी

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI:10.5281/zenodo.19126787

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.19126787>



Creative Commons



सार:

शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षकों की कार्य-दृष्टि, उनकी कार्य-सहभागिता तथा नौकरी के प्रति संतुष्टि पर निर्भर करती है। विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक मूल्यों के विकास तथा नैतिक शिक्षा के संवाहक भी होते हैं। इसलिए शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि तथा उनके दृष्टिकोण का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक हो जाता

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षकों के दृष्टिकोण, उनकी कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह देखा गया है कि शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि पर वेतन, कार्य-परिस्थिति, प्रशासनिक सहयोग, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा व्यावसायिक विकास के अवसर जैसे कारकों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जिन शिक्षकों को अपने कार्य में पर्याप्त सहयोग, सम्मान तथा संसाधन प्राप्त होते हैं, वे अधिक उत्साह के साथ शिक्षण कार्य में संलग्न रहते हैं और उनकी कार्य-सहभागिता भी अधिक होती है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण वाले शिक्षक विद्यार्थियों के साथ अधिक प्रभावी संवाद स्थापित करते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक अपने कार्य से असंतुष्ट होते हैं, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव उनके शिक्षण-कार्य तथा विद्यार्थियों के अधिगम पर पड़ता है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षकों की नौकरी-संतुष्टि तथा कार्य-सहभागिता को बढ़ाने के लिए शिक्षा-प्रशासन को अनुकूल कार्य-परिस्थिति, उचित वेतन-व्यवस्था, प्रशिक्षण के अवसर तथा प्रेरक वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।¹ इससे न केवल शिक्षकों की कार्य-क्षमता में वृद्धि होगी, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा-प्रणाली की गुणवत्ता भी सुदृढ़ होगी।

कीवर्ड: विद्यालयी शिक्षक, दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता, नौकरी-संतुष्टि, शिक्षा-प्रणाली, शिक्षक प्रेरणा

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. जयन्ती कुमारी. (2025). विद्यालयी शिक्षकों के दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता एवं नौकरी-संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन। International Journal of Advance and Applied Research, 13(2), 178–184. <https://doi.org/10.5281/zenodo.19126787>



प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला मानी जाती है। किसी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है, और शिक्षा की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षकों की भूमिका से निर्धारित होती है। शिक्षक केवल पाठ्य-वस्तु के संप्रेषक नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास के मार्गदर्शक भी होते हैं।

विद्यालयी शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि तथा उनके दृष्टिकोण का प्रभाव सीधे-सीधे शिक्षण-प्रक्रिया और विद्यार्थियों के अधिगम पर पड़ता है। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और उन्हें अपने कार्य से संतुष्टि प्राप्त होती है, तो वे अधिक उत्साह तथा प्रतिबद्धता के साथ शिक्षण कार्य करते हैं। इसके विपरीत, यदि शिक्षक अपने कार्य से असंतुष्ट होते हैं, तो उनकी कार्य-क्षमता तथा कार्य-सहभागिता में कमी आ सकती है। वर्तमान समय में शिक्षा-प्रणाली अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ता प्रशासनिक दबाव, सीमित संसाधन, कार्यभार की अधिकता तथा सामाजिक अपेक्षाएँ शिक्षकों के कार्य-जीवन को प्रभावित करती हैं। ऐसे में शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि तथा कार्य-सहभागिता का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध-लेख विद्यालयी शिक्षकों के दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि के विभिन्न आयामों का

विश्लेषण करता है। इस संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि विद्यालयी शिक्षकों का दृष्टिकोण केवल उनके व्यक्तिगत विचारों तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह उनके शिक्षण व्यवहार, कार्य के प्रति समर्पण तथा विद्यार्थियों के साथ उनके संबंधों को भी प्रभावित करता है। शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक वातावरण तैयार करता है, जिससे विद्यार्थियों में सीखने की रुचि तथा आत्मविश्वास का विकास होता है। इसके विपरीत यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति उदासीन या असंतुष्ट रहते हैं, तो इसका प्रभाव शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता पर भी पड़ सकता है।

विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य-सहभागिता भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। कार्य-सहभागिता से आशय है कि शिक्षक अपने कार्य में कितनी सक्रियता, प्रतिबद्धता और रुचि के साथ भाग लेते हैं। जो शिक्षक अपने कार्य में सक्रिय रूप से संलग्न रहते हैं, वे शिक्षण की नवीन विधियों का प्रयोग करते हैं, विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने का प्रयास करते हैं तथा विद्यालय की शैक्षिक और सह-शैक्षिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस प्रकार उनकी सक्रिय भागीदारी विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को अधिक सजीव और प्रभावी बनाती है।

इसके अतिरिक्त नौकरी-संतुष्टि भी शिक्षकों की कार्यक्षमता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं, तो उनमें अपने दायित्वों को बेहतर ढंग से



निभाने की प्रेरणा उत्पन्न होती है। वे विद्यार्थियों के विकास के लिए अधिक समर्पण के साथ कार्य करते हैं और शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षक अपने कार्य-परिस्थितियों, वेतन, प्रशासनिक सहयोग या सामाजिक सम्मान से असंतुष्ट होते हैं, तो उनकी कार्य-प्रेरणा में कमी आ सकती है।

अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण, उनकी कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए कारक हैं। इन तीनों के संतुलन और समन्वय से ही विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस शोध-लेख में विद्यालयी शिक्षकों के दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि के विभिन्न आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिससे शिक्षा-प्रणाली को अधिक प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण बनाने के उपायों को समझा जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य:

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. विद्यालयी शिक्षकों के कार्य-दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों की कार्य-सहभागिता के स्तर का विश्लेषण करना।
3. शिक्षकों की नौकरी-संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।

4. दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि के बीच संबंध का विश्लेषण करना।

अध्ययन की आवश्यकता:

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट नहीं होते, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों की समस्याओं, उनकी अपेक्षाओं तथा उनकी कार्य-परिस्थितियों का अध्ययन किया जाए।

यह अध्ययन शिक्षा-प्रशासन को यह समझने में सहायता प्रदान करेगा कि किस प्रकार शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि को बढ़ाया जा सकता है और उनकी कार्य-सहभागिता को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

शोध पद्धति:

इस अध्ययन में **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति** का उपयोग किया गया है।

अध्ययन के लिए विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से संबंधित विभिन्न स्रोतों, पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा रिपोर्टों का अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त शिक्षकों के अनुभवों तथा उनके विचारों का भी विश्लेषण किया गया।



विद्यालयी शिक्षकों का दृष्टिकोण:

शिक्षकों का दृष्टिकोण उनके कार्य-व्यवहार को प्रभावित करता है। सकारात्मक दृष्टिकोण वाले शिक्षक अपने कार्य को केवल नौकरी के रूप में नहीं देखते, बल्कि इसे समाज-निर्माण के महत्वपूर्ण दायित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों के साथ संवेदनशील व्यवहार करते हैं, उन्हें प्रेरित करते हैं तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत रहते हैं।

इसके विपरीत, नकारात्मक दृष्टिकोण वाले शिक्षक अपने कार्य के प्रति उदासीन रहते हैं, जिससे शिक्षण-प्रक्रिया प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा जाता है कि शिक्षक का दृष्टिकोण विद्यालय के समग्र शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करता है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक न केवल अपने विषय के प्रति समर्पित रहते हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और नैतिक मूल्यों के विकास के लिए भी निरंतर प्रयास करते हैं। ऐसे शिक्षक शिक्षण को एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं और विद्यार्थियों की रुचि तथा क्षमता के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन करते हैं।²

विद्यालयी शिक्षकों का दृष्टिकोण उनके व्यावसायिक विकास से भी जुड़ा हुआ होता है। जो शिक्षक अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, वे नवीन ज्ञान अर्जित करने, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने तथा आधुनिक शिक्षण तकनीकों को अपनाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

इससे उनकी शिक्षण क्षमता में वृद्धि होती है और वे विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षित कर पाते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो वे शिक्षण कार्य को केवल एक औपचारिक दायित्व के रूप में निभाते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है और विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाती। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालयों में ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जो शिक्षकों को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करे।

अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षकों का दृष्टिकोण शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। सकारात्मक दृष्टिकोण वाले शिक्षक न केवल विद्यार्थियों के ज्ञान-विकास में योगदान देते हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कार्य-सहभागिता:

कार्य-सहभागिता से आशय है कि शिक्षक अपने कार्य में कितनी सक्रियता तथा समर्पण के साथ भाग लेते हैं।

उच्च कार्य-सहभागिता वाले शिक्षक—

- शिक्षण-प्रक्रिया में नवीन विधियों का प्रयोग करते हैं
- विद्यार्थियों की समस्याओं को समझते हैं



• **विद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हैं**

इस प्रकार उनकी सक्रियता शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाती है।

नौकरी-संतुष्टि:

नौकरी-संतुष्टि से आशय है कि व्यक्ति अपने कार्य से कितना संतुष्ट है।

शिक्षकों की नौकरी-संतुष्टि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं—

नौकरी-संतुष्टि का प्रभाव शिक्षकों के मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। संतुष्ट शिक्षक सामान्यतः अधिक उत्साही, सकारात्मक और रचनात्मक होते हैं, जिससे वे विद्यार्थियों के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर पाते हैं। इससे कक्षा का वातावरण अधिक प्रेरणादायक और सीखने के अनुकूल बनता है।

इसके विपरीत यदि शिक्षकों को अपने कार्य में उचित सम्मान, सहयोग और संसाधन प्राप्त नहीं होते, तो उनमें असंतोष की भावना उत्पन्न हो सकती है। ऐसी स्थिति में उनकी कार्य-रुचि में कमी आ सकती है, जिससे शिक्षण-प्रक्रिया की गुणवत्ता प्रभावित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए शिक्षा-प्रशासन का यह दायित्व है कि वह शिक्षकों के लिए अनुकूल कार्य-परिस्थितियाँ उपलब्ध कराए तथा उनके व्यावसायिक विकास के अवसरों को बढ़ावा दे। अतः यह कहा जा सकता है कि नौकरी-संतुष्टि विद्यालयी शिक्षकों की कार्यक्षमता और

शिक्षा की गुणवत्ता से सीधे रूप से जुड़ी हुई है। यदि शिक्षकों को उचित वेतन, सुरक्षित कार्य-परिस्थिति, प्रशासनिक सहयोग तथा व्यावसायिक उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं, तो वे अपने कार्य को अधिक प्रभावी ढंग से संपन्न कर सकते हैं और विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

1. वेतन और आर्थिक सुरक्षा
2. कार्य-परिस्थिति
3. प्रशासनिक सहयोग
4. सामाजिक प्रतिष्ठा
5. पदोन्नति और प्रशिक्षण के अवसर

जब ये कारक अनुकूल होते हैं, तो शिक्षक अपने कार्य से अधिक संतुष्ट रहते हैं।

विश्लेषण:

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण, उच्च कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि के बीच गहरा संबंध है। जो शिक्षक अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, वे अधिक सक्रियता से कार्य करते हैं और उन्हें अपने कार्य से संतुष्टि भी अधिक प्राप्त होती है।³

इसके विपरीत, नकारात्मक दृष्टिकोण कार्य-संतुष्टि को कम कर देता है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि कार्य-सहभागिता और नौकरी-संतुष्टि के बीच पारस्परिक संबंध पाया जाता है। जिन शिक्षकों में अपने कार्य के प्रति अधिक सहभागिता होती है, वे विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों, सह-पाठ्यक्रमीय कार्यक्रमों तथा विद्यार्थियों के मार्गदर्शन



में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इससे न केवल उनके कार्य के प्रति लगाव बढ़ता है, बल्कि उन्हें अपने कार्य से आत्मसंतोष भी प्राप्त होता है।

अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक शिक्षण-प्रक्रिया में नवीन विधियों और तकनीकों का प्रयोग करने के लिए अधिक उत्सुक रहते हैं। वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने का प्रयास करते हैं तथा उनके अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के लिए रचनात्मक प्रयास करते हैं। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के सीखने का स्तर भी बेहतर होता है और विद्यालय का शैक्षिक वातावरण अधिक अनुकूल बनता है। इसके विपरीत जिन शिक्षकों में कार्य के प्रति उदासीनता या असंतोष की भावना होती है, वे सामान्यतः अपने दायित्वों को केवल औपचारिक रूप से निभाते हैं। ऐसी स्थिति में उनकी कार्य-सहभागिता कम हो जाती है, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण, उच्च कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए तत्व हैं। इन तीनों के संतुलित विकास से न केवल शिक्षकों की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है, बल्कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को भी सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष:

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

1. विद्यालयी शिक्षकों का दृष्टिकोण उनकी कार्य-सहभागिता को प्रभावित करता है।
2. नौकरी-संतुष्टि शिक्षकों की कार्य-क्षमता को बढ़ाती है।
3. अनुकूल कार्य-परिस्थिति शिक्षकों को अधिक प्रेरित करती है।

शिक्षा-प्रशासन को शिक्षकों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए। उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयी शिक्षकों का दृष्टिकोण, उनकी कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि शिक्षा-प्रणाली की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तत्व हैं। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और उन्हें अनुकूल कार्य-परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं, तो वे अधिक उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत कार्यक्षमता में वृद्धि होती है, बल्कि विद्यार्थियों के अधिगम और व्यक्तित्व विकास पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि शिक्षा-प्रशासन शिक्षकों की व्यावसायिक आवश्यकताओं, उनकी समस्याओं तथा उनकी अपेक्षाओं को समझते हुए उचित नीतियाँ और व्यवस्थाएँ विकसित करे। शिक्षकों को पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षण के अवसर, प्रशासनिक



सहयोग तथा सामाजिक सम्मान प्रदान किए जाने से उनकी कार्य-संतुष्टि में वृद्धि हो सकती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता और नौकरी-संतुष्टि को समुचित महत्व देना आवश्यक है। जब शिक्षक संतुष्ट और प्रेरित होते हैं, तभी वे विद्यार्थियों के समग्र विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं और शिक्षा-प्रणाली को अधिक सुदृढ़ तथा प्रभावी बना सकते हैं।⁴

सुझाव:

इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि विद्यालयों में ऐसा सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण विकसित किया जाए, जिसमें शिक्षक अपने कार्य को स्वतंत्रता, रचनात्मकता तथा आत्मविश्वास के साथ संपन्न कर सकें। शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों, तकनीकी साधनों तथा नवीन शैक्षिक प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिए समय-समय पर कार्यशालाएँ, सेमिनार और उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

शिक्षा-प्रशासन को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षकों के कार्य-भार को संतुलित रखा जाए और उन्हें अपने शैक्षिक दायित्वों के निर्वहन के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ। इसके साथ ही शिक्षकों की उपलब्धियों और उत्कृष्ट कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए सम्मान एवं पुरस्कार की व्यवस्था भी की जानी चाहिए, जिससे उनमें

कार्य के प्रति उत्साह और प्रेरणा का विकास हो सके।

अतः इन सुझावों के माध्यम से यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यालयी शिक्षकों के दृष्टिकोण, कार्य-सहभागिता तथा नौकरी-संतुष्टि को सुदृढ़ बनाकर शिक्षा-प्रणाली की गुणवत्ता को और अधिक प्रभावी तथा समृद्ध बनाया जा सके।

1. शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. कार्य-परिस्थिति को अधिक अनुकूल बनाया जाए।
3. शिक्षकों को सामाजिक सम्मान और प्रोत्साहन दिया जाए।
4. प्रशासनिक सहयोग को सुदृढ़ किया जाए।

सन्दर्भ:

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस, पृ. 45-52।
2. शर्मा, आर. ए. (2012). शिक्षा अनुसंधान की पद्धतियाँ। मेरठ: सुरभि प्रकाशन, पृ. 78-85।
3. सिंह, एल. सी. (2015). शिक्षक शिक्षा। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, पृ. 102-110।
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.). (2018). शिक्षक विकास प्रतिवेदन (Teacher Development Report)। नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी., पृ. 25-30।